



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 36]

नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 24, 2009/माघ 4, 1930

No. 36]

NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 24, 2009/MAGHA 4, 1930

राष्ट्रपति सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 24 जनवरी, 2009

सं. 2-प्रेज/2009/सीए (II).—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी उत्कृष्ट बहादुरी के लिए “अशोक चक्र” से सम्मानित करने की स्वीकृति प्रदान करती हैं:—

1. आई सी-45618 कर्नल जोजन थॉमस, जाट रेजिमेंट/45 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अगस्त, 2008)

जम्मू कश्मीर में तैनात 45 राष्ट्रीय राइफल बटालियन के कमान अफसर कर्नल जोजन थॉमस ने 22 अगस्त, 2008 को प्रातः 0330 बजे एक आतंकवादी समूह का पता लगाया। वे उपलब्ध सैनिकों के साथ घने जंगलों में आतंकवादियों का पीछा करते हुए तुरंत उस क्षेत्र की ओर गए।

शीघ्र की आतंकवादियों तथा उनका पीछा कर रहे सैन्य दलों के बीच भयंकर लड़ाई शुरू हो गई। मोर्चे पर अगुवाई करते हुए कर्नल थॉमस ने बिल्कुल नजदीक से दो आतंकवादियों का सफाया कर दिया। इस कार्रवाई के दौरान उन्हें गोलियों के गंभीर घाव लगे। इसके बावजूद, उन्होंने सुरक्षित स्थान पर ले जाने से इनकार कर दिया तथा वह बहादुरीपूर्ण कार्रवाई करते हुए खड़ी चट्टान से लुढ़क कर नीचे आए जिससे वह आतंकवादी जो छिपा बैठा था और कारगर गोलीबारी कर रहा था स्तब्ध रह गया। उन्होंने गुथम-गुथ्या की भयंकर लड़ाई में तीसरे दुर्घात आतंकवादी का सफाया कर दिया। हालांकि बाद में वे अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

कर्नल जोजन थॉमस ने तीन कट्टर आतंकवादियों का सफाया करने में अनुकरणीय नेतृत्व तथा असाधारण बहादुरी का प्रदर्शन किया तथा राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

2. श्री मोहन चन्द शर्मा, इन्स्पेक्टर, दिल्ली पुलिस (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 सितम्बर, 2008)

श्री मोहन चन्द शर्मा, इन्स्पेक्टर दिल्ली पुलिस को 19 सितम्बर, 2008 को एक खास सूचना मिली की दिल्ली में शृंखला बम धमाकों के संबंध में वांछित एक संदिग्ध व्यक्ति बाभिया नगर, दिल्ली में स्थित बाटला हाऊस क्षेत्र के एक फ्लैट में छिपे हुआ है। श्री शर्मा ने घर के अन्दर स्थित व्यक्तियों की स्वयं जाँच करने का निर्णय लिया। सात सदस्यीय दल को लेकर वह आगे बढ़े तथा उस फ्लैट पर पहुँचे जहाँ पर संदिग्ध छिपा हुआ था। उन्होंने दरवाजे पर दस्तक दी परंतु किसी ने दरवाजा नहीं खोला। उन्होंने फ्लैट में दूसरे दरवाजे से प्रवेश किया। आतंकवादियों ने उन पर अकारण गोलीबारी शुरू कर दी। श्री शर्मा को बंदूक की गोलीबारी की प्रथम बौछार लगी। निर्भीकता के साथ उन्होंने गोलीबारी का जवाब दिया। इस प्रकार शुरू हुई गोलीबारी के आदान-प्रदान में दो आतंकवादी मारे गए तथा एक पकड़ा गया तथा दो मौके से भागने में सफल रहे। तथापि, श्री शर्मा बाद में घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

श्री मोहन चन्द शर्मा ने आतंकवादियों से लड़ते हुए अनुकरणीय साहस, कर्तव्यपरायणता तथा व्यावसायिक कौशल का प्रदर्शन किया तथा राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

3. 13621503 हवलदार बहादुर सिंह बोहरा, 10वीं बटालियन पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल) (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 25 सितम्बर, 2008)

हवलदार बहादुर सिंह बोहरा लगभग 14000 फुट की ऊंचाई पर जम्मू-कश्मीर के सामान्य क्षेत्र लवांज में तलाश ऑपरेशन करने वाले आक्रमण दल के स्क्वाड कमांडर थे।

उन्होंने 25 सितम्बर, 2008 को 1815 बजे एक आतंकवादी दल को देखा तथा उन्हें बीच में ही रोकने के लिए शीघ्रता से आगे बढ़े। इस कार्रवाई के दौरान, हवलदार बहादुर सिंह बोहरा शत्रु की भारी गोलीबारी की चपेट में आ गए। निर्भीक रहते हुए वे आतंकवादियों पर टूट पड़े तथा उनमें से एक को मार गिराया। तथापि, भारी गोलीबारी के बीच उन्हें बाएं कंधे पर बन्दूक की गोलियों के घाव लगे। सुरक्षित स्थान पर ले जाए जाने से इन्कार करते हुए तथा अपने घावों की परवाह न करते हुए उन्होंने आक्रमण जारी रखा तथा बिल्कुल नजदीक से दूसरे आतंकवादी को मार गिराया जबकि उन्होंने अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त होने से पूर्व गुत्थमगुत्था की भंयकर लड़ाई में एक तीसरे आतंकवादी का भी सफाया कर दिया।

इस प्रकार, हवलदार बहादुर सिंह बोहरा ने आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ाई में अत्यधिक असाधारण वीरता का प्रदर्शन किया तथा राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

#### 4. श्री हेमन्त कमलाकर करकरे, संयुक्त पुलिस आयुक्त, महाराष्ट्र (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 नवम्बर, 2008)

26 नवम्बर, 2008 को रात्रि 2140 बजे श्री हेमन्त कमलाकर करकरे, संयुक्त पुलिस आयुक्त तथा आतंकवादी निरोधक दस्ते के प्रमुख को छत्रपति शिवाजी टर्मिनल रेलवे स्टेशन मुम्बई पर आतंकवादियों के हमले के बारे में सूचना मिली। आतंकवादी अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे और लोगों पर हथगोले फेंक रहे थे। आक्रमण की गंभीरता को देखते हुए श्री करकरे ने बड़ी सतर्कता से आगे की योजना बनाई तथा अलग-अलग दल अलग-अलग स्थानों पर भेजे तथा स्वयं छत्रपति शिवाजी टर्मिनल रेलवे स्टेशन के निकट दादा भाई नौरोजी रोड की ओर बढ़े। तब तक आतंकवादी बदरुद्दीन तैयबजी मार्ग से होते हुए कामा अस्पताल की ओर बढ़ गए थे जहां उन्होंने तीन व्यक्तियों को मार दिया। अस्पताल के छज्जे से दो आतंकवादियों ने दल पर आक्रमण कर दिया। श्री करकरे ने गोलीबारी का जवाब दिया। कुछ देर की शांति के बाद महापालिका मार्ग से गोलीबारी की आवाज सुनी गई। श्री करकरे ने क्षेत्र को सुरक्षित करने के लिए कामा अस्पताल के पिछले दरवाजे पर बाहरी घेरा डाला। तब वे स्थिति से निपटने के लिए अपने दल के साथ जीप में महापालिका मार्ग की ओर रवाना हो गए। इस बीच आतंकवादी रंग भवन गली की ओर चले गए। पुलिस जीप को आती देख, वे अंधेरे में एक वृक्ष के पीछे छुप गए तथा जीप पर घात लगाकर हमला किया। श्री करकरे और उनके दल ने गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद गोलीबारी का जवाब दिया तथा एक आतंकवादी को घायल कर दिया जो बाद में पकड़ा गया।

श्री हेमन्त कमलाकर करकरे ने उच्चकोटि के साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया तथा अति विषम परिस्थितियों में मोर्चे पर आगे रहकर नेतृत्व करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया तथा राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

#### 5. श्री अशोक मारुतराव कामटे, अपर पुलिस आयुक्त, महाराष्ट्र (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 नवम्बर 2008)

26 नवम्बर, 2008 को भारी मात्रा में हथियारों से लैस दस आतंकवादियों ने मुम्बई के विभिन्न प्रतीकात्मक महत्व के स्थानों पर

एक साथ आक्रमण कर दिया। श्री अशोक मारुतराव कामटे, अपर पुलिस आयुक्त शीघ्र छत्रपति शिवाजी टर्मिनल रेलवे स्टेशन पर पहुंचे। आतंकवादी लोगों पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे और हथगोले फेंक रहे थे।

आतंकवादियों के कामा अस्पताल में घुसने का संदेश प्राप्त होने पर श्री कामटे अन्य पुलिस अफसरों तथा अपने स्टाफ के साथ कामा अस्पताल के पीछे पहुंचे। जब वे घटनास्थल पर पहुंचे तो दो आतंकवादियों ने अस्पताल के छज्जे से पुलिस दल पर गोलियां बरसा दीं। श्री कामटे ने गोलीबारी का जवाब दिया। स्तब्धता छा गई, तत्पश्चात् महापालिका मार्ग से गोलियों की आवाज सुनाई दी। क्षेत्र को सुरक्षित करने के लिए कामा अस्पताल के पिछले दरवाजे पर एक बाहरी घेरा डाला गया। श्री कामटे स्थिति से निपटने के लिए अन्य सदस्यों के साथ महापालिका मार्ग की ओर पुलिस जीप में रवाना हो गए। इसी बीच आतंकवादी रंग भवन गली की ओर चले गए थे। उनकी तरफ आ रही पुलिस जीप को देखकर वे अंधेरे में एक पेड़ के पीछे छुप गए तथा पुलिस की जीप पर घात लगाकर हमला कर दिया। श्री कामटे तथा उनके दल के गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने गोलीबारी का जवाब दिया तथा एक आतंकवादी को घायल कर दिया जो बाद में पकड़ा गया। श्री कामटे गंभीर रूप से घायल हो गए थे तथा अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

श्री अशोक मारुतराव कामटे ने आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ाई में उच्च कोटि के साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया तथा अग्रणी नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया और राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

#### 6. श्री विजय सहदेव सालस्कर, इन्सपेक्टर, अपकर्षण विरोध प्रकोष्ठ (एंटी एक्स्टोर्शन सेल) अपराध शाखा, महाराष्ट्र (मरणोपरांत)

26 नवम्बर, 2008 को भारी मात्रा में हथियारों से लैस 10 आतंकवादियों ने मुम्बई के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों पर एक साथ धावा बोली। इन्सपेक्टर विजय सहदेव सालस्कर मुम्बई के अपराध शाखा में अपकर्षण विरोधी प्रकोष्ठ में तैनात थे। आतंकवादी हमले की सूचना पाते ही, वह हरकत में आए और हमला वाले स्थान पर पहुंच गए। तब तक आतंकवादी छत्रपति शिवाजी टर्मिनल रेलवे स्टेशन पर आतंक मचाने के बाद कामा अस्पताल की ओर निकल पड़े थे।

जब पुलिस दल अपनी रणनीति पर काम कर रहा था, दोनों आतंकियों ने अस्पताल के छज्जे से उन पर गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। श्री सालस्कर ने जवाबी गोलीबारी की। थोड़ी देर की शांति के बाद महापालिका मार्ग से गोलियों के दागे जाने की आवाज सुनाई पड़ी। कामा अस्पताल के पिछले दरवाजे पर घेरा डाला गया। इन्सपेक्टर सालस्कर अन्य साथियों के साथ पुलिस की जीप में बैठ कर महापालिका मार्ग की ओर बढ़े। इसी बीच आतंकवादी रंग भवन गली की ओर बढ़े। पुलिस जीप आने की भनक लगते ही आतंकवादी अंधेरे में एक पेड़ की आड़ में छिप गए और घात लगाकर पुलिस की जीप पर हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद भी इन्सपेक्टर सालस्कर और उनकी टुकड़ी ने जवाबी गोलीबारी की और एक आतंकवादी को घायल कर दिया जिसे बाद में पकड़ लिया गया। श्री सालस्कर गंभीर रूप से घायल हो गए तथा अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

श्री विजय सहदेव सालस्कर ने विकट परिस्थितियों में अदम्य एवं असाधारण साहस का प्रदर्शन किया और राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

**7. श्री तुकाराम गोपाल ओम्बले, सहायक पुलिस उप-निरीक्षक, महाराष्ट्र (मरणोपरांत)**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 नवम्बर, 2008)

26 नवम्बर, 2008 को जब मुंबई पर आतंकवादी हमला हुआ तब श्री तुकाराम गोपाल ओम्बले, सहायक पुलिस उप-निरीक्षक उस समय डी बी मार्ग पुलिस स्टेशन पर रात्रि ड्यूटी पर थे।

आक्रमण की सूचना मिलने पर उन्होंने लगभग 2200 बजे गिरगांव चौपाटी पर नाकाबंदी की। आधी रात के करीब वायरलेस पर यह संदेश दिया गया कि दो आतंकवादी एक कार में विधान भवन गेट से मेरिन ड्राइव की ओर भाग रहे हैं। श्री ओम्बले ने अपनी तरफ आ रही कार को देख लिया। कार बेरीकेड से 50 फुट की दूरी पर रुकी जिसकी हेडलाइट तेज रोशनी बिखेर रही थी। ड्राइवर की सीट पर बैठा आतंकवादी कार के विंड स्क्रीन पर पानी छिड़क रहा था जिससे पुलिस बल को कुछ दिखाई न दे तथा वह यू टर्न लेने की कोशिश कर रहा था परंतु कार सड़क विभाजक से टकरा गई। इस मौके पर दोनों आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण करने का बहाना किया और उनमें से एक ने अचानक गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस दल ने जवाबी गोलीबारी की तथा उन्हें घायल कर दिया। श्री ओम्बले कार के बायें दरवाजे की तरफ लपके तथा उस पर झपटे और ए के 47 की बैरल को पकड़ कर उससे राइफल छीनने की कोशिश की। इस कार्रवाई के दौरान वह गंभीर रूप से घायल हो गए तथा घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

श्री तुकाराम गोपाल ओम्बले ने आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ाई में अदम्य तथा अतुल्य साहस का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

**8. आई सी-58660 मेजर संदीप उन्नीकृष्णन, बिहार रेजिमेंट/51 विशेष कार्रवाई ग्रुप (मरणोपरांत)**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 नवम्बर, 2008)

26 नवम्बर, 2008 को जब मुंबई पर आतंकवादी हमला हुआ था, तब मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ने होटल ताजमहल से आतंकवादियों को मार भगाने के लिए अपनी टुकड़ी के साथ ऑपरेशन का नेतृत्व किया जिसमें उन्होंने छठी तथा पांचवी मंजिल से 14 बंधकों को छुड़ाकर भूतल पर लाकर सुरक्षित बचाया।

होटल के मुख्य सीढ़ी मार्ग से होकर गुजरते समय उनकी टुकड़ी पर प्रथम तल से भारी गोलीबारी होने लगी जिसमें उनकी टुकड़ी का एक सदस्य गंभीर रूप से घायल हो गया। अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए मेजर संदीप ने अचूक गोलीबारी करके आतंकवादियों को घेर लिया और घायल कमांडो को सुरक्षित जगह ले जाकर बचा लिया। इस प्रकार शुरू हुई गोलीबारी की लड़ाई के दौरान उनके दाएं हाथ में गोली लग गई। यह देखते हुए कि आतंकवादी अंधेरे की आड़ में कमरे से भाग निकलने की कोशिश कर रहे हैं, घायल होने के बावजूद यह अफसर तुरंत प्रवेश द्वार की ओर दौड़े, कारगर गोलीबारी की, इस तरह बच निकलने के रास्तों को

रोका तथा आतंकवादियों में से एक को घायल कर दिया। दोनों ओर से हो रही इस गोलीबारी में उन्हें फिर से गोलियों की बौछार लगी और बाद में अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए। अफसर की इस तुरंत कार्रवाई से मजबूर होकर आतंकवादियों को वसाबी रेस्तरां में पनाह लेनी पड़ी। इस प्रकार वसाबी रेस्तरां से आतंकवादियों का सफलता से सफाया करने में शेष कार्यबल को प्राथमिक ताकत मिली।

मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ने सखाभाव तथा ऊंचे दर्जे के नेतृत्व के साथ-साथ उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया और राष्ट्र के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

**9. 4073611 हवलदार गजेन्द्र सिंह, पैराशूट रेजिमेंट/51 विशेष कार्य ग्रुप (मरणोपरांत)**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 नवम्बर, 2008)

27/28 नवम्बर, 2008 को हवलदार गजेन्द्र सिंह नरीमन हाउस, मुंबई में आतंकवादियों द्वारा बंधक बनाए गए लोगों को बचाने के लिए किए जा रहे ऑपरेशन में अपनी टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। अंतिम मंजिल से आतंकवादियों का सफाया करने के बाद व भवन की चौथी मंजिल पर पहुंच गए जहां पर आतंकवादी मोर्चा लिए हुए थे। ज्योंही वे निकट आए, आतंकवादियों ने ग्रेनेड से उन्हें घायल कर दिया। निर्भीक रहते हुए, उन्होंने गोलीबारी जारी रखी तथा अत्यधिक बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए वे आतंकवादियों की ओर बढ़ते रहे। अपने घावों तथा व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करके हवलदार गजेन्द्र सिंह रेंगकर दरवाजे तक आए तथा अंदर की तरफ गोलीबारी की और इस तरह से गोलीबारी के समक्ष आ गए। इस कार्रवाई में उन्होंने एक आतंकवादी को घायल कर दिया तथा बाकियों को वापस कमरे में जाने के लिए मजबूर कर दिया और इस प्रकार उनकी स्थिति स्थिर हो गई। अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए घायल होने के बावजूद उन्होंने अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त होने तक आतंकवादियों पर गोलीबारी जारी रखी। कमांडो कार्रवाई के इस बहादुरी भरे कारनामे से आतंकवादियों को शुरू में ही बेअसर करने में उनके दल को महत्वपूर्ण कामयाबी मिली।

हवलदार गजेन्द्र सिंह ने अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया और आतंकवादियों के विरुद्ध लड़ते हुए राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

बरुण मित्रा, राष्ट्रपति के संयुक्त सचिव

**PRESIDENT'S SECRETARIAT  
NOTIFICATION**

New Delhi, the 24th January, 2009

No.2-Pres/2009/4/CA(II)].—The President is pleased to approve the award of the “Ashoka Chakra” to the undermentioned persons for the acts of most conspicuous gallantry :—

1. IC-45618 COLONEL JOJAN THOMAS, JAT REGIMENT/45 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award : 22 August, 2008)

On 22 August, 2008, at about 0330 hours, Colonel Jojan Thomas, Commanding Officer of 45 Rashtriya Rifles

Battalion deployed in Jammu and Kashmir established contact with a group of terrorists. He immediately rushed to the area with available troops in pursuit of the terrorists in the thick forests.

Soon a fierce firefight ensued between the terrorists and the pursuit parties. Leading from the front, Colonel Thomas eliminated two terrorists from close quarters. In the process he sustained severe gun shot wounds. In spite of this, he refused to be evacuated and in a daring act, rolled down the cliff to surprise a terrorist who had taken a concealed position and was attacking with effective fire. In a fierce hand-to-hand fight he eliminated the third dreaded terrorist. However, he later succumbed to his injuries.

Colonel Jojan Thomas displayed exemplary leadership and exceptional gallantry in eliminating three hardcore terrorists and made the supreme sacrifice for the nation.

**2. SHRI MOHAN CHAND SHARMA, INSPECTOR, DELHI POLICE (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : 19th September, 2008)

On 19 September, 2008, Shri Mohan Chand Sharma, Inspector, Delhi Police received specific information that a suspected person wanted in connection with the serial bomb blasts in Delhi was hiding in a flat of Batla House area in Jamia Nagar, Delhi. Shri Sharma decided to check the inmates himself. He led a seven member team quickly and reached the identified flat where the suspect was hiding. He knocked at the front door but no body opened. He entered the flat from the other door. The terrorists opened unprovoked fire on him. Shri Sharma received the first burst of fire from a handgun. Undaunted he returned the fire. In the ensuing exchange of fire, two terrorists were killed and one caught while two managed to flee the scene. Shri Sharma, however, succumbed to his injuries later.

Shri Mohan Chand Sharma showed exemplary courage, devotion to duty and professional skills in fighting the terrorists and made the supreme sacrifice for the nation.

**3. 13621503 HAVILDAR BAHADUR SINGH BOHRA, 10TH BATTALION THE PARACHUTE REGIMENT (SPECIAL FORCES) (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : 25th September, 2008)

Havildar Bahadur Singh Bohra was the squad Commander of an assault team tasked for a search operation in General Area Lawanz of Jammu and Kashmir at an altitude of about 14000 feet.

On 25 September, 2008, at 1815 hours he observed a group of terrorists and moved quickly to intercept them. In the process, Havildar Bahadur Singh Bohra came under heavy hostile fire. Undaunted he charged at the terrorists and killed one of them. However, in the intense fire fight, he suffered gun shot wounds on his left shoulder. Refusing evacuation and unmindful of his injuries, he continued with the assault and killed the second terrorist at extremely close range while a third terrorist was eliminated after a fierce hand to hand combat before succumbing to his injuries.

Havildar Bahadur Singh Bohra, thus, displayed most conspicuous bravery and made the supreme sacrifice for the nation in fighting the terrorists.

**4. SHRI HEMANT KAMLAKAR KARKARE, JOINT COMMISSIONER OF POLICE, MAHARASHTRA, (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : 26th November, 2008)

On 26 November 2008 at 2140 hours, Shri Hemant Kamlakar Karkare, Joint Commissioner of Police and Chief of the Anti-terrorist Squad, received information about a terrorist attack at Chhatrapati Shivaji Terminus Railway Station, Mumbai. The terrorists were firing indiscriminately and throwing grenades at people. Considering the gravity of the attacks, Shri Karkare meticulously planned and dispatched different teams to different places and himself headed towards Dadabhai Nauroji Road, near Chhatrapati Shivaji Terminus Railway Station. The terrorists had by then moved towards Cama Hospital Building via Badruddin Tayyabji Marg where they killed three persons. The team was attacked by the terror duo from the terrace of the Hospital. Shri Karkare retaliated the fire. Following a silence, firing shots were heard from Mahapalika Marg. Shri Karkare deployed an outer cordon at the rear gate of the Cama Hospital for securing the area. Then he moved in a police jeep to Mahapalika Marg along with his team to handle the situation. The terrorists had meanwhile moved to Rang Bhawan lane. On noticing the approaching police jeep, they hid behind a tree in the darkness and ambushed the jeep. Despite fatal injuries he and his team returned the fire and injured one of the terrorist who was caught later.

Shri Hemant Kamlakar Karkare displayed courage and leadership of the highest order and set an example by leading from the front against grave odds and made the supreme sacrifice for the nation.

**5. SHRI ASHOK MARUTRAO KAMTE, ADDL. COMMISSIONER OF POLICE, MAHARASHTRA (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : 26th November, 2008)

On 26th November, 2008, ten heavily armed terrorists launched simultaneous attacks on various iconic places in Mumbai. Shri Ashok Marutrao Kamte, Addl. Commissioner of Police, rushed to the Chhatrapati Shivaji Terminus Railway Station. The terrorists were firing indiscriminately and throwing grenades at people.

On receipt of the message of terrorists having entered the Cama Hospital, Shri Kamte alongwith other Police officers and their staff reached the rear of the Cama Hospital. When they reached the site, the terrorist-duo rained bullets from the terrace of the Hospital towards the police party. Shri Kamte returned the fire. Following a silence, firing shots were heard from Mahapalika Marg. An outer cordon at the rear gate of the Cama Hospital for securing the area was deployed. Shri Kamte moved in a police jeep to Mahapalika Marg along with other members to handle the situation. The terrorists had meanwhile moved to Rang

Bhawan lane. On noticing the approaching police jeep, they hid themselves behind a tree in the darkness and ambushed the police jeep. Despite fatal injuries he and his team returned the fire and injured one of the terrorists who was caught later. Shri Kamte was injured fatally and succumbed to his injuries.

Shri Ashok Marutrao Kamte displayed courage and leadership of the highest order and set an example by leading from the front while fighting the terrorists and made the supreme sacrifice for the nation.

**6. SHRI VIJAY SHAHADEV SALASKAR, INSPECTOR, ANTI EXTORTION CELL OF CRIME BRANCH, MAHARASHTRA (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : 26th November, 2008)

On 26th November, 2008, ten heavily armed terrorists launched simultaneous attacks on various iconic places in Mumbai. Shri Vijay Shahadev Salaskar, Inspector, was posted at Anti Extortion Cell of Crime Branch, Mumbai. On receiving information of terrorist attack, he swung into action and rushed to the spot. The terrorists after creating mayhem at Chhatrapati Shivaji Terminus Railway Station had moved to Cama Hospital.

When they were working on the strategy, the terrorist-duo rained bullets from the terrace of the Hospital towards the police party. Shri Salaskar returned the fire. Following a silence, firing shots were heard from Mahapalika Marg. An outer cordon at the rear gate of the Cama Hospital for securing the area was deployed. He along with others moved in a police jeep to Mahapalika Marg. The terrorists had meanwhile moved to Rang Bhawan lane. On noticing the approaching police jeep, they hid themselves behind a tree in the darkness and ambushed the police jeep. Despite fatal injuries he and his team returned the fire and injured one of the terrorist who was caught later. Shri Salaskar was injured fatally and succumbed to his injuries.

Shri Vijay Shahadev Salaskar showed raw grit and unparalleled courage against grave odds and made the supreme sacrifice for the nation.

**7. SHRI TUKARAM GOPAL OMBALE, ASSTT. SUB-INSPECTOR OF POLICE, MAHARASHTRA (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : 26th November, 2008)

On 26 November, 2008, Shri Tukaram Gopal Ombale, Asstt. Sub-Inspector of Police was on night duty at D.B. Marg Police Station when the terrorist attack in Mumbai took place.

On receipt of information of attack, he organized Nakebandi at Girgaum Chowpaty at about 2200 hours. Around midnight a wireless message was flashed that two terrorists were moving from Vidhan Bhawan Gate towards Marine Drive in a car. Shri Ombale noticed the car approaching towards him. The car stopped 50 feet from the barricade with its headlights on high beam. The terrorist on the driver seat started spraying water on the wind screen of the car blocking the vision of the police party and tried to U-turn but ended in dashing the road divider. At this juncture, both the terrorists pretended to surrender but one of them opened abrupt firing. The police returned fire and injured them. Shri Ombale rushed to the left gate of the

car and pounced on him and tried to snatch the rifle by holding the barrel of AK 47. In the process he got seriously injured and succumbed to his injury.

Shri Tukaram Gopal Ombale showed raw grit and unparalleled courage in making the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

**8. IC-58660 MAJOR SANDEEP UNNIKRISHNAN, BIHAR REGIMENT/51 SPECIAL ACTION GROUP (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : 27th November, 2008)

On 26th November, 2008 when the terrorist attack in Mumbai took place, Major Sandeep Unnikrishnan along with his team led the operation to flush out terrorists from Hotel Taj Mahal, Mumbai in which he rescued 14 hostages, from sixth and fifth floor and escorted them to the ground floor.

While moving through the central staircase his team came under intense fire from first floor, in which one of his team members got grievously injured. Showing utter disregard to personal safety, Maj Sandeep pinned down the terrorists with accurate fire and rescued the injured commando to safety. In the ensuing fire fight, he got injured on his right arm. Seeing the terrorists trying to escape from the room under cover of darkness, the officer despite his injuries immediately rushed towards the entrance, brought down effective fire, thus blocking the escape routes and injuring one of them. In this exchange of fire, he was again hit by volley of bullets and subsequently succumbed to his injuries. This spontaneous action of the officer forced the terrorists to take refuge in Wasabi Restaurant, thus giving the initial impetus to remaining Task Force to successfully eliminate terrorists at Wasabi Restaurant.

Major Sandeep Unnikrishnan displayed most conspicuous bravery besides camaraderie and leadership of the highest order and made the supreme sacrifice for the nation.

**9. 4073611 HAVILDAR GAJENDER SINGH, PARACHUTE REGIMENT/51 SPECIAL ACTION GROUP (POSTHUMOUS)**

(Effective date of the award : 27th November, 2008)

On 27/28 November 2008, Havildar Gajender Singh was leading his Squad for hostage rescue at Nariman House, Mumbai. After clearing top floor from the terrorists, he reached fourth floor of the building, where the terrorists had taken position. As he closed in the terrorists, they hurled a grenade injuring him. Undeterred, he kept firing and closing in with the terrorists displaying utmost valour. Unmindful of his injury, Havildar Gajender Singh with utmost disregard to personal safety, crawled up to the door and charged inside firing, thus exposing himself to fire. In the act, he injured one of the terrorist and forced them to retreat inside the room, thus fixing their position. Displaying indomitable spirit, he kept on firing at the terrorists in spite of being wounded till he succumbed to his injuries. This gallant act of the Commando provided the crucial breakthrough to his team for early neutralization of terrorists.

Havildar Gajender Singh displayed conspicuous courage against grave odds and made the supreme sacrifice for the nation in combating the terrorists.

BARUN MITRA, Jt. Secy. to the President